B.A. Part - I (Honours), Paper - II

Branches of Philosophy

दर्शन का 'आविर्भाव' मानव जीवन से जुड़ा हुआ है। इसलिए मानव - जीवन से जुड़ी समस्याओं को जानने एवं समझने और उसे दूर करने के लिए हमें दर्शनशास्त्र को समझना आवश्यक होगा। मैंने अपने पहले नोट्स में 'दर्शन' को समझाने का प्रयास किया है। क्योंकि किसी भी विषय में आगे बढ़ने से पहले उसके बारे में जानना बहुत ही आवश्यक है। B.A Part - 1, Paper - II में हमें "दर्शन का क्षेत्र", अर्थात् तत्व मीमांसा (Metaphysics) तथा ज्ञानमीमांसा (Epistemology) के बारे में पढ़ना है। और इसके जुड़ी समस्याएँ, सिद्धान्त एवं शाखाओं के विषय में भी जानना है।

सारे ही दर्शनशास्त्र के ज्ञाता - विद्वानों ने कहा है, कि वो सभी इस Paper में आगे बढ़ने से पहले दर्शनशास्त्र के क्षेत्र, विषय वस्तु और उसकी शाखाओं को अच्छी तरह समझेंगे, ताकि आगे बढ़ने में हमें और आपको आसानी हो। इसलिए हम इसे एक "चित्र" के माध्यम से पहले समझेंगे, फिर उसकी विस्तृत चर्चा करेंगे।

आगे →

Scanned by CamScanner

तत्व-मीमांसा (Metaphysics)

- **एकतत्ववाद (Monism)** (विश्व का मूल तत्व एक है)
  - **भौतिकवादी एकतत्ववाद (Material Monism)** (विश्व का मूल तत्व एक है → वह है - "जड़")
  - **आध्यात्मवादी एकतत्ववाद (Spiritual Monism)** (विश्व का मूल तत्व एक है - वह है → "चेतन")
- **द्वैतवाद (Dualism)** (विश्व के मूल तत्व दो हैं - जड़ और चेतन)
- **बहुतत्ववाद (Pluralism)** (विश्व का मूल तत्व एक या दो नहीं, बल्कि अनेक हैं)
  - **भौतिकवादी बहुतत्ववाद (Material Pluralism)** (विश्व भौतिक अणुओं की सृष्टि है)
  - **अध्यात्मवादी बहुतत्ववाद (Spiritual pluralism)** (विश्व चेतन अणुओं की सृष्टि है)

आगे →

Scanned by CamScanner

ज्ञान - मीमांसा
(Epistemology)

	बुद्धिवाद (Rationalism)	अनुभववाद (Empiricism)	समीक्षावाद (Criticism)	अन्तःप्रज्ञावाद (Intuitionism)
1. स्वरूप (Nature)	ज्ञान का स्वरूप बौद्धिक है। ज्ञान जन्मजात प्रत्ययों के रूप में निहित होता है।	ज्ञान का स्वरूप अनुभवात्मक है। ज्ञान अनुभवार्जित है, जो इन्द्रियों से प्राप्त स्वसंवेदना से बनता है। ज्ञान जन्मजात नहीं है।	ज्ञान का स्वरूप समन्वयात्मक है, अर्थात् बौद्धिक भी है, और अनुभवात्मक भी है।	ज्ञान का स्वरूप आध्यात्मिक होता है।
2. स्त्रोत (Source)	ज्ञान का स्त्रोत बुद्धि है।	ज्ञान का स्त्रोत इन्द्रिय अनुभव है।	ज्ञान का स्त्रोत बुद्धि और इन्द्रिय अनुभव दोनों ही है।	ज्ञान का स्त्रोत अन्तःकरण है।
3. सीमा (Limits)	मानवीय बुद्धि ही ज्ञान की सीमा है।	ज्ञान अनुभव से ही प्रारम्भ होता है और अनुभव में ही इसका अन्त भी हो जाता है।	मानवीय बुद्धि और इन्द्रियानुभव की सीमा ही ज्ञान की सीमा है।	मानवीय बुद्धि और अनुभव दोनों सीमित है, किन्तु आत्मा असीम, अनादि और अनंत है। अतः अन्तःकरण से प्राप्त ज्ञान असीम है।

नोट: → तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा की विस्तृत व्याख्या हम अगले नोट्स में करेंगे।

Scanned by CamScanner